17657

हनुमान चालीसा

PALM LEAF INNOVATIONS

हनुमान चालीसा

ॐ

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

ॐ

अञ्जना
वायुदेवः

५

चौपाई

ॐ

इन्द्रः
वायुपुत्रः
प्रह्लादानाम् अनुग्रहः

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥ १ ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥

सूर्यात् शिक्षा

महावीर बिक्रम बजरंगी ।

कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ३ ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।

कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥ ४ ॥

रामसुग्रीवसमागमः

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।

काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥ ५ ॥

संकर सुवन केसरीनंदन ।

तेज प्रताप महा जग बंदन ॥ ६ ॥

ॐ

रामलक्ष्मणौ
वटुरूपधारी हनुमान्
सुग्रीवसख्यम्

विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥ ८ ॥

ॐ

सीतान्वेषणनियोगः

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।

बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।

रामचंद्र के काज सँवारे ॥ १० ॥

ॐ

लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥ ११ ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ १२ ॥

ॐ

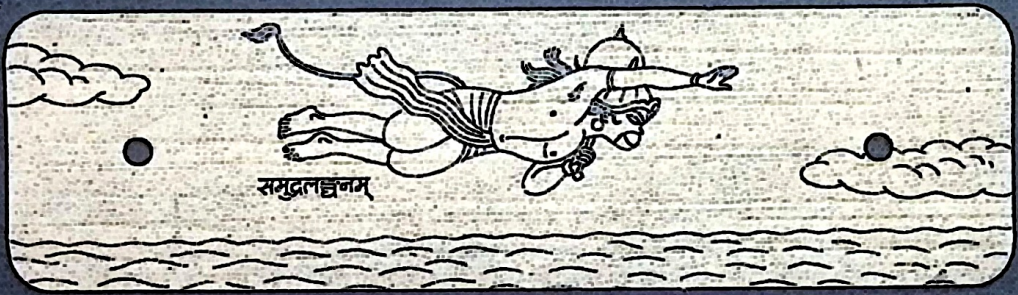
समुद्रलङ्घनम्

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ १३ ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥ १४ ॥

छायाग्रहिणीवधः
सुरसा

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥ १५ ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १६ ॥

ॐ

लङ्कालक्ष्मीमोक्षः

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।

लंकेस्वर भये सब जग जाना ॥ १७ ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥

सीतादर्शनम्
चूडामणिस्वीकारः

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥

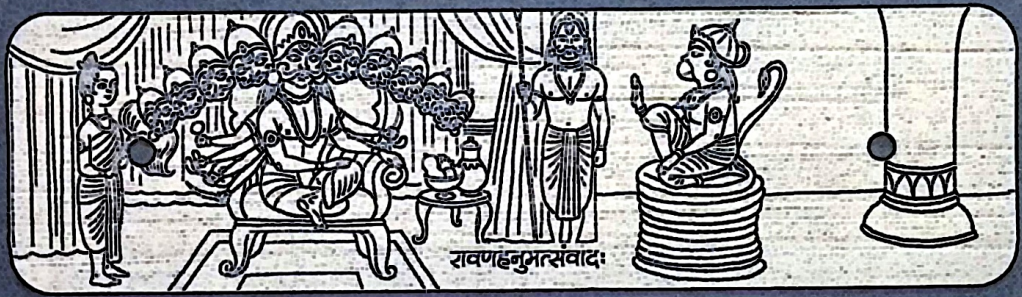
रावणहनुमत्संवादः

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहु को डर ना ॥ २२ ॥

ॐ

लङ्कादहनम्

आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥ २३ ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

ॐ

सीतावृत्तान्तनिवेदनम्

नासै रोग हरै सब पीरा ।

जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै ।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

ॐ

मृतसञ्जीवनी

सब पर राम तपस्वी राजा ।

तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।

सोइ अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

गरुडागमनम्

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥ ३० ॥

रामरावणयुद्धम्

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

विभीषणराज्याभिषेकः

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥
अंतकाल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

ॐ

रामेश्वरप्रतिष्ठा

और देवता चित्त न धरई ।

हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥ ३५ ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥

ॐ

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥ ३७ ॥
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

ॐ

तपोनिरतः हनुमान्

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥ ४० ॥

ॐ

दोहा

४६ पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। ॐ

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

रचयिता - गोस्वामी तुलसीदास, छन्द - भक्तगयन्द

ॐ

पञ्चमुखी हनुमान्

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

ॐ

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ २ ॥

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ 3 ॥

ॐ

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ४ ॥

बान लग्यो उर लछिमन कें तब प्रान तजे सुत रावन मारो।

लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो॥

आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ५ ॥

ॐ

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ६॥

ॐ

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ७ ॥

ॐ

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥

दोहा

लाल देह लाली लसे अरु धरि लाल लँगूर।

बज्र देह दानव दलन जय जय जय कपि सूर ॥

सोरठा

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ १ ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥ २ ॥

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्।
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ ४ ॥

ॐ

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।

कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ ५ ॥

ॐ

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ६ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ ८ ॥

ॐ

श्रीहनुमत्पञ्चरत्नम्

(श्रीशङ्कराचार्यविरचितम्)

ॐ

वीताखिलविषयेच्छं जातानन्दाश्रुपुलकमत्यच्छम् ।
सीतापतिदूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥ १ ॥
तरुणारुणमुखकमलं करुणारसपूरपूरितापाङ्गम् ।
सञ्जीवनमाशासे मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम् ॥ २ ॥

शम्बरवैरिशरातिगमम्बुजदलविपुललोचनोदारम् ।

कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्बज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे ॥ ३ ॥

दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्तिः ।

दारितदशमुखकीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः ॥ ४ ॥

वानरनिकराध्यक्षं दानवकुलकुमुदरविकरसदृशम् ।
दीनजनावनदीक्षं पवनतपः पाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥
एतत्पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम् ।
चिरमिह निखिलान् भोगान् भुक्त्वा श्रीरामभक्तिभाग्भवति ॥ ६॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ७ ॥

आञ्जनेयो महावीरो हनुमान् मारुतात्मजः ।
तत्वज्ञानप्रदः सीतादेवीमुद्राप्रदायकः ॥ १॥
अशोकवनिकाच्छेत्ता सर्वमायाविभञ्जनः ।
सर्वबन्धविमोक्ता च रक्षोविध्वंसकारकः ॥ २॥

परविद्यापरीहारः परशौर्यविनाशनः ।

परमन्त्रनिराकर्ता परयन्त्रप्रभेदकः ॥ ३॥

सर्वग्रहविनाशी च भीमसेनसहायकृत् ।

सर्वदुःखहरः सर्वलोकचारी मनोजवः ॥ ४॥

पारिजातद्रुमूलस्थः सर्वमन्त्रस्वरूपवान् ।
सर्वतन्त्रस्वरूपी च सर्वयन्त्रात्मकस्तथा ॥५॥
कपीश्वरो महाकायः सर्वरोगहरः प्रभुः ।
बलसिद्धिकरः सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकः ॥६॥

कपिसेनानायकश्च भविष्यच्चतुराननः ।

कुमारब्रह्मचारी च रत्नकुण्डलदीप्तिमान् ॥७॥

सञ्चलद्वालसन्नद्धलम्बमानशिखोज्ज्वलः ।

गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञो महाबलपराक्रमः ॥८॥

कारागृहविमोक्ता च शृङ्खलाबन्धमोचकः ।

सागरोत्तारकः प्राज्ञो रामदूतः प्रतापवान् ॥ ९॥

वानरः केसरिसुतः सीताशोकनिवारकः ।

अञ्जनागर्भसम्भूतो बालार्कसदृशाननः ॥ १०॥

विभीषणप्रियकरो दशग्रीवकुलान्तकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च वज्रकायो महाद्युतिः ॥ ११॥
चिरञ्जीवी रामभक्तो दैत्यकार्यविघातकः ।
अक्षहन्ता काञ्चनाभः पञ्चवक्त्रो महातपाः ॥ १२॥

लङ्किणीभञ्जनः श्रीमान् सिंहिकाप्राणभञ्जनः ।
गन्धमादनशैलस्थो लङ्कापुरविदाहकः ॥ १३॥
सुग्रीवसचिवो धीरः शूरो दैत्यकुलान्तकः ।
सुरार्चितो महातेजा रामचूडामणिप्रदः ॥ १४॥

कामरूपी पिङ्गलाक्षो वार्धिमैनाकपूजितः ।
कबलीकृतमार्ताण्डमण्डलो विजितेन्द्रियः ॥ १५॥
रामसुग्रीवसन्धाता महिरावणमर्दनः ।
स्फटिकाभो वागधीशो नवव्याकृतिपण्डितः ॥ १६॥

चतुर्बाहुर्दीनबन्धुर्महात्मा भक्तवत्सलः ।

सञ्जीवननगाहर्ता शुचिर्वाग्मी दृढव्रतः ॥ १७॥

कालनेमिप्रमथनो हरिमर्कटमर्कटः ।

दान्तः शान्तः प्रसन्नात्मा दशकण्ठमदापहृत् ॥ १८॥

योगी रामकथालोलः सीतान्वेषणपण्डितः ।
वज्रदंष्ट्रो वज्रनखो रुद्रवीर्यसमुद्भवः ॥ १९॥
इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्रविनिवारकः ।
पार्थध्वजाग्रसंवासी शरपञ्जरभेदकः ॥ २०॥

ॐ

दशबाहुर्लोकपूज्यो जाम्बवत्प्रीतिवर्धनः ।
सीतासमेतश्रीरामपादसेवाधुरन्धरः ॥ २१॥

इत्येवं श्रीहनुमतो नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥

यः पठेच्छृणुयान्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ २२॥

॥ इति श्रीमद् आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हनुमानजी की आरती

ॐ

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥ १ ॥

जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै ॥ २ ॥

अंजनिपुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ ३ ॥

दे बीरा रघुनाथं पठाये लंका जारि सीय सुधि लाये ॥ ४ ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥ ५ ॥

लंका जारि असुर सँहारे। सियारामजी के काज सँवारे ॥ ६ ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे ॥ ७ ॥

पैठि पताल तोरि जम-कारे अहिरावन की भुजा उखारे ॥ ८ ॥

ॐ

बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे ॥ ९ ॥

सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे ॥ १० ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई ॥ ११ ॥

जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै ॥ १२ ॥

ॐ

श्रीराम वन्दना

(गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड श्लोक)

ॐ

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।

लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नामाम्यहम् ॥ १ ॥

ॐ

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ २ ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ 3 ॥

ॐ

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।

नवकंज-लोचन कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं ॥ १ ॥

कन्दर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुन्दरं।

पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक-सुतावरं ॥ २ ॥

ॐ

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।

रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥ ३ ॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणं।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥ ४ ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं ॥ ५ ॥

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर सांवरो
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥ ६ ॥

ॐ

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥ ७ ॥

जानि गौरि अनुकूल सियहिय हरषु न जाइ कहि।
मन्जुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥ ८ ॥

सियावर रामचंद्र की जय

PE
ॐ

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।

हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥ १ ॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।

भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥ २ ॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥ ३ ॥
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥ ४ ॥

ॐ

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥ ५ ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥ ६ ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥ ७ ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥ ८ ॥

ॐ

HANUMAN CHALISA